
**SHRI MRD ARTS & EELK COMMERCE COLLEGE,
CHIKHLI**

SYBA-SEM-4

HINDI-PAPER-10(HINDI SAHITY KA ITIHAS)

TOPIC-RAMDHARI SINGH KA SAHITIK PARICHAY

DR.RIYAZ TAI(ASSISTANT PROFESSOR)

HINDI –VIBHAG

■ प्रस्तावना :

- रामधारी सिंह ' दिनकर ' का जन्म 1908 और निधन 1974 में हुआ था । वे एक भारतीय हिन्दी कवि, निबंधकार, एवम आलोचक थे । जिन्हें सबसे महत्व पूर्ण आधुनिक हिन्दी कवियों में से एक माना जाता है । ' दिनकरजी ' राष्ट्रवादी कवियों में राष्ट्रवादी कविता के साथ एक विद्रोही कवि के रूप में उभरे । उनकी कविता ने वीररस को उकसाया । राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ाने वाली पेरणा दायक देशभक्ति पूर्ण रचना के कारण उन्हें ' राष्ट्र कवि ' के रूप में सम्मान दिया गया ।

साहित्यक परिचय:

- श्री रामधारी सिंह · दिनकर · जिसे राष्ट्र कवि कहा जाता है । उन्होंने अपनी प्रेरक देश भक्ति पूर्ण रचना के कारण राष्ट्रवादी भावना पैदा की । दार्शनिक कवि दिनकर ने हिन्दी साहित्यकारों में लौकिक ‘ सूर्य ‘ की तरह बढ़ोतरी की ।
- उन्होंने ज्यादातर वीररस भरी कविताओं का सर्जन किया, जिनमें ‘ उर्वशी ‘ एक अपवाद है । उनकी सबसे बड़ी रचनाएँ हैं – ‘ रश्मिरथी ‘ और ‘ परशुराम की प्रतीक्षा ‘ । रीति कालीन भूषण के बाद उन्हें वीररस का सबसे बड़ा हिन्दी कवि माना गया है ।

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि –” वे उन लोगों में बहुत लोकप्रिय है, जिनकी मातृ भाषा हिन्दी नहीं थी, और वे अपनी मातृ भाषा के लिए प्रेम के प्रतिक थे ।” हरिवंशराय बच्चन ने कहा है कि –” उनके उचित सम्मान के लिए उन्हें चार ज्ञानपीठ पुरस्कार – कविता, गद्य , भाषाओं और हिन्दी में उनकी सेवा के लिए मिलना चाहिए ।”
- रामवृक्ष बेनी पूरी ने लिखा है कि –” दिनकर देश में क्रांतिकारी आंदोलन के आवाज दे रहे हैं ।”
- नामवर सिंह ने लिखा है कि –” वह वास्तव में अपनी उम्र के शिष्य थे ।

- उनकी कविताएं पुनरुत्थान के बारे में थीं। वह अक्सर हिन्दु पौराणिक कथाओं को अभिव्यक्त करते हैं, और 'कर्ण' जैसे महाकाव्य के नायकों को संबोधित करते हैं। वह साम्राज्यवाद विरोधी राष्ट्रकवि थे। उन्होंने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक असमानताओं और वंचितों के शोषण के उद्देश्य को लिखा। एक प्रगतिशील और मानवतावादी कवि, जिन्होंने इतिहास और वास्तविकता को सीधे कविता के साथ संयुक्त संवाद शक्ति के माध्यम से व्यक्त किया।
- 'उर्वशी' का विषय आध्यात्मिक सम्बन्धों से अलग प्यार, जुनून और स्त्री – पुरुष के सम्बन्धों को दर्शाता है।

- उनका ' कुरुक्षेत्र ' महाभारत के शांति पर्व के आधार पर एक कथा है । यह उस समय लिखा गया, जब दूसरे विश्वयुद्ध की यादें कवि के मनमें ताजा थी । उनकी कुछ कविताएं कवि की सामाजिक चिंता को दर्शाती हैं, जो राष्ट्र की सीमाओं से परे हैं ।
- अपनी रचना ' संस्कृती के चार अध्याय ' में उन्होंने कहा कि –" विविध संस्कृतियों, भाषाओं, और स्थान के बावजूद भारत एकजुट हो गया है, क्योंकि हम अलग – अलग हो सकते हैं, लेकिन हमारे विचार एक समान हैं ।"

रचनाएँ:

- कविता: प्रणभंग, रेणुका, हुंकार, रसवन्ती, कुरुक्षेत्र, सामधेनी, बापू, दिल्ली, उर्वशी , परशुराम की प्रति क्षा, रश्मिरथी, आदि ।
- गद्य रचनाएँ:
- मिट्टी की ओर, हमारी सांस्कृतिक एकता, संस्कृति के चार अध्याय, काव्य की भूमिका, धर्म – नैतिकता और विज्ञान, मेरी यात्राएँ आदि ।

साहित्यिक पुरस्कार:

- ' कुरुक्षेत्र ' के लिए नागरी – प्रचारिणी सभा, उत्तर और भारत सरकार ने उन्हें पुरस्कार दिया । ' संस्कृति के चार अध्याय ' के लिए ' साहित्य अकादमी ' पुरस्कार, भारत सरकार द्वारा ' पद्मभूषण ' मिला आदि ।